~~M.A.~~

MA Sem. II

CC – 7

Topic : —

Specific Phobia

Dr. Kumari Sadhana Prasad
Associate Prof.
Deptt. of Psychology

Lecture ① one

Specific Phobia

Phobia एक प्रकार का असंगत भय है जो वास्तव में बिना भय की परिस्थितियों में होता है। Phobia शब्द ग्रीक गाथा के Phobos से बना है, जिसका अर्थ सन्देह, आशंका या भय होता है। यह एक ऐसा मनस्ताप है जिसमें रोगी सामान्य उत्तेजनाओं के प्रति तीव्र भाव का प्रदर्शन करता है। इसमें रोगी का भय निराधार होता है, जब एक व्यक्ति भीड़, ऊँचे स्थानों या कमरे में भयभीत रहने लगे, नदी या तालाब के पानी को देखकर ही घबड़ाने लगे, पालतू जानवरों से भयभीत होने लगे या घर के सामान्य उपयोग की वस्तुएँ जैसे — चाकू, छुरी, चम्मच से भी भयभीत हो जाय — ऐसी समस्त घटनाएँ उसे व्यक्ति में असामान्य अनैच्छिक, अनियंत्रित, अविवेकपूर्ण, अतार्किक तथा अतिरंजित भय की स्थिति उत्पन्न करती है, उन्हें Phobia कहते हैं।

N. Cameron (1963) के अनुसार — "फोबिया या दुर्नीति एक ऐसा प्रयास है जो विस्थापन प्रक्षेपण और परिहार की प्रतिक्रियाओं द्वारा उत्पन्न तनाव और चिन्ता को कम करता है।"

"A Phobic reaction is an attempt to reduce internally generated tension and anxiety by a process of displacement; Projection and avoidance"

James C. Coleman (1976) के अनुसार — "फोबिया किसी वस्तु या परिस्थिति के प्रति सतत भय है जो रोगी के लिए वास्तविक खतरा उपस्थित नहीं करता है अथवा उस रोग में खतरा वास्तविक स्थिति से अत्यधिक बढ़-चढ़ अनुपात में व्यक्त होता है।"

James C. Coleman (1976) —
"A Phobia is a persistent fear of some object or situation that presents no actual danger to the person or in which the danger is magnified out of all proportion to its actual seriousness"

इस प्रकार रोगी का भय अतार्किक एवं असामान्य होता है। रोगी का भय किसी भी जीवन, वस्तु या परिस्थिति आदि के प्रति हो सकता है। उसे इस भय की निरर्थकता का ज्ञान होता है किन्तु फिर भी वह भय से मुक्त नहीं हो पाता है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के आधार पर पता चलता है कि फोबिया व्यक्ति का निराधार भय है। रोगी अच्छी तरह से जानता है कि उससे डरने की कोई बात नहीं है तथा उसे किसी प्रकार का खतरा नहीं है, फिर भी वह भयभीत रहता है। मनोवैज्ञानिक शैफर तथा बेंगी ने इस विकृति की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं की चर्चा इस प्रकार की है :—

(i) फोबिया का संबंध बाल्यकालीन आघात के किसी तीव्र आघात से होता है। यदि कम उम्र में ही किसी व्यक्ति को अत्यधिक भय उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, तो उसमें Phobia के लक्षण विकसित हो जाता है।

(ii) Phobia का सम्बन्ध कोई ऐसा अप्रिय अनुभव से होता है जो

निषिद्ध एवं लज्जाजनक होते हैं जिनके बारे में रोगी न तो खुलकर किसी को बता सकता है और न खुद विचार कर सकता है।

(iii) Phobia में एक स्थायी भाव व्यक्ति के अन्दर निहित होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि रोगी को भय की वास्तविक परिस्थिति से संबंधित अपराध-भावना उक्त घटना के चेतन प्रत्यक्षीकरण में रोकती है।

(iv) Phobia में सामान्यीकरण की विशेषता पाई जाती है। किसी एक परिस्थिति में उत्पन्न भय उससे मिलती-जुलती दूसरी परिस्थितियों में भी देखा जाता है।

(v) कुछ मनोवैज्ञानिक प्रविधियों से रोगी की इन परिस्थितियों को प्रत्याह्वान कराया जाता है। जिससे Phobia की उत्पत्ति हुई है, इससे रोगी में भय या चिन्ता में कमी आ जाती है।

Phobia के प्रकार :—

1. ऊँचे स्थान का भय (Acrophobia)
2. खुले स्थान का भय (Agrophobia)
3. दर्द का भय (Algophobia)
4. बादल या बिजली कड़कने का भय (Astrophobia)
5. बन्द स्थान का भय (Hemetophobia)
6. खून का भय (Hemetophobia)
7. धूल का भय (Monophobia)
8. रोग का भय (Myctophobia)

13. जहर दिये जाने का भय (Foxophobia)
14. चलने-फिरने का भय (Locomotion Phobia)
15. भाषण देने का भय (Lalophobia)
16. पानी का भय (Hydrophobia)
17. स्त्रियों के सम्पर्क का भय (Gyno-Phobia)